रोजगार सूचना : एक परिचय

डॉ. विनीता पाण्डेय
रीडर लक्ष्मी बाई साहू जी कॉलेज जबलपुर

प्रस्तावना :– किसी युवा किसी द्वारा किसी कैरियर का महत्वपूर्ण चयन या पसंद उसके जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों में से एक होता है। एक 'कैरियर' में सम्मिलित होता है – व्यवसायों की विस्तृत श्रंखला के बारे में संक्षिप्त, सही और नवीनतम सूचना किसी व्यक्ति का व्यवसाय उसके जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करता है, जैसे उसका समाज के प्रति दृष्टिकोण, उसकी मित्रता, उस स्थान का प्रकार जहॉ वह रहता है तथा वे गतिविधियॉ जो वह अपने खाली समय में सम्पन्न करता है। अन्य लोगों की दृष्टि में उसकी प्रतिष्ठा तथा समाज में उसकी भूमिका का निर्धारण भी उसके व्यवसाय द्वारा ही किया जाता है।

रोजगार का अर्थ :– कुछ ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग हम आपस में बदल कर करते हैं। जैसे– 'कार्य', जॉब, रोजगार और 'स्थिति', मिलर और फार्म ने 'कार्य' शब्द को जीविका पर केन्द्रित सामान्य किया और इस किया के विशिष्ट नित्यकर्म के रूप में परिभाषित किया है ·

शर्टल के अनुसार, ''रोजगार विभिन्न संस्थानों में एक ही प्रकार के कार्यों का समूह हैं।''

प्रत्येक रोजगार के विभिन्न पक्ष होते हैं या उनसे सम्बन्धित कई बहस योग्य तथ्य होते हैं। उन तथ्यों या पक्षों पर कोई व्यवसायिक चयन या पसंद से पहले बहस करनी बहुत आवश्यक होती है। प्रत्येक रोजगार के उन तथ्यों या पक्षों के बारे में विश्लेषण द्वारा यह जानना व्यवसायिक निर्देशन के लिये बहुत आवश्यक है कि क्या वह व्यक्ति किसी रोजगार के विभिन्न पक्षों के अनुरूप है या नहीं? क्या रोजगार के विभिन्न पक्षों के अनुसार व्यक्ति के पास योग्यताए हैं या नहीं? क्या व्यक्ति रोजगार के विभिन्न पक्षों के अनुसार स्वयं को समायोजित कर पायेगा या नहीं? क्या व्यक्ति रोजगार के विभिन्न पक्षों के अनुसार स्वयं को समायोजित कर पायेगा या नहीं? क्या रोजगार के विभिन्न पक्ष व्यक्ति की आवश्यकताओं, रूचियों और कौशलों की कसौटी पर पूरा उतरते हैं यह नहीं? इन सभी प्रश्नों के उत्तर रोजगार के विभिन्न पक्षों के अध्ययन में निंहित होते हैं। अतः निर्देशन के दृष्टिकोण से किसी व्यवसाय या रोजगार के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करना अति आवश्यक हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि व्यवसाय या रोजगार के इन विभिन्न पक्षों का अध्ययन निर्देशन प्रकिया का आवश्यक और महत्वपूर्ण भाग है।

रोजगार या व्यवसाय के आवश्यक पक्ष :– किसी भी रोजगार या व्यवसाय के विभिन्न पक्ष नि.लि. हो सकते है –

रोजगार का महत्व :– सर्वप्रथम हमें रोजगार के महत्व के बारे में चिंतन करना चाहिये। इन महत्व का अवलोकन विद्यार्थी या व्यक्ति के दृष्टिकोण, सामाजिक दृष्टिकोण और देश की परिस्थितियों के दृष्टिकोण से होना चाहिये। रोजगार के महत्व से अभिप्राय हैं –

1. रोजगार या व्यवसाय में कितने लोग कार्यरत हैं?

2. क्या रोजगार प्रगतिशील है?

3. रोजगार या व्यवसाय विकास की अवस्था में हैं?

4. समाज में उस रोजगार या व्यवसाय क्या रूतबा है?

कार्य की प्रकृति :– 'कार्य' की प्रकृति से अभिप्राय है कि व्यक्ति द्वार व्यवसाय में किस प्रकार का कार्य करवाया जाता हैं?

1. क्या व्यवसाय में बाहर का कार्य करवाया जाना है?

2. क्या ऑफिस कार्य है?

3. क्या कार्य यांत्रिक प्रकृति का है?

4. क्या कार्य क्लर्क का है?

5. क्या कार्य पूरा दिन बैठकर करने का है?

6. क्या कार्य पूरा दिन खड़े होकर करने का है?

अतः प्रत्येक व्यवसाय में करवाये जाने वाले कार्य की प्रकृति को जानना आवश्यक है ताकि व्यक्ति अपनी क्षमता, रूचि और योग्यता के अनुसार व्यवसाय का चयन कर सके।

कार्य–परिस्थितियॉ :– किसी व्यवसाय या रोजगार में कार्य परिस्थितियों का अध्ययन बहुत आवश्यक हो चुका है क्योंकि यह जानना आवश्यक है कि कोई व्यक्ति स्वयं कितने घंटे काय कर सकता है ? कार्य–स्थलों की कार्य–परिस्थितियॉ कैसी हैं ? क्या वहॉ पर पानी, बिली और हवा का पर्याप्त प्रबन्ध है या नहीं ? यदि किसी व्यक्ति को पहले से ही इन परिस्थितियों का पता चल जाता है तो वह व्यवसाय के चयन में किसी प्रकार की कोई गलती नहीं करेगा।

वांछित योग्यताऍ :– किसी भी रोजगार के लिये दो प्रकार की योग्यताओं का परीक्षण किया जाता हैं – शारीरिक और मानसिक योग्यताएं। कई व्यवसायों या रोजगारों में मुख्य रूप से शारीरिक योग्यताओं का अवलोकन किया जाता है जबकि कई व्यवसायों में मानसिक योग्यताएं हावी रहती है। कई व्यवसायों में दानों प्रकार की योग्यताओं की आवश्यकता रहती है। कई बार कई व्यवसायों में शारीरिक, मानसिक और मनोवैज्ञानिक योग्यताओं की अवलोकन किया जाता है, जैसे–

1. सांवेगिक परिपक्वता कितनी चाहिये?

2. व्यक्ति में कितनी स्थिरता है?

3. व्यक्ति में कितना साहस और धैर्य है?

4. व्यक्ति का व्यक्तित्व कैसा है?

शारीरिक योग्यताओं में शरीर की बनावट से सम्बन्धित योग्यताएं शामिल होनी चाहिए, जैसे–

1. क्या सम्पूर्ण शरीर द्वारा कार्य किया जाता है तथा क्या व्यक्ति इसे कर सकता है?

2. क्या कार्य शरीर के कुछ भागों द्वारा किया जाता है तथा क्या व्यक्ति में ऐसा करने की योग्यता है?

3. क्या व्यक्ति शारीरिक तनाव और थकान को सह सकता है? इत्यादि।

इसी प्रकार, मानसिक योग्यताओं में व्यक्ति की बुद्धि , रूचियां, सृजनात्मकता, कल्पना, तर्क शक्ति, स्मृति इत्यादि सम्मिलित हैं। किसी रोजगार या व्यवसाय का अध्ययन हमें यह बताता है कि कौन– कौन सी मानसिक शक्तियों की आवश्यकता है तथा क्या व्यक्ति या विद्यार्थी के पास वे मानसिक शक्तियॉ हैं?

शैक्षिक योग्यताएं और शारीरिक शर्तें :– जो व्यक्ति व्यवसायिक निर्देशन प्रदान करता है इसे इसका ज्ञान होना अति आवश्यक है कि किसी व्यवसाय की शैक्षिक और शारीरिक शर्तें क्या हैं? उदाहरणार्थ– न्यूनतम शैक्षिक योग्यताएं, प्रशिक्षण का वांछित पैटर्न ,न्यूनतम और अधिकतम आयु सीमाएं, न्यूनतम और अधिकतम वांछित ऊॅचाई और भार इत्यादि जो कि किसी व्यवसाय या रोजगार में प्रवेश के लिये वांछित हैं। इसके अतिरिक्त व्यवसायिक मार्गदर्शक को रोजगार या व्यवसाय के नि.लि. पक्षों का ज्ञान भी होना चाहिए–

1. दृष्टि

2. श्रवण शक्ति

3. कलर नैत्र दृष्टि

4. सैक्स

व्यवसाय या रोजगार में प्रवेश :– सभी व्यवसायों या रोजगारों का उनमें प्रवेश का तरीका एक जैसा नहीं होता। अतः उनमें प्रवेश का तरीका जानना आवश्यक होता है। क्या किसी व्यवसाय में प्रवेश रोजगार विभाग के माध्यम से होता है? क्या किसी व्यवसाय में प्रवेश प्रतिस्पर्धा परीक्षा द्वारा होता है ? क्या किसो व्यवसाय में प्रवेश

प्रार्थना–पत्र लिख कर होता है ? इन प्रश्नों का उत्तर ढूँढ़ना बहुत ही आवश्यक होता है।

स्वयं रोजगार के मामले में, यह अनुमान लगाना अति आवश्यक होता है कि अपना व्यवसाय शुरू करने के लिये कितना धन चाहिये। अपना स्वयं को व्यवसाय शुरू करने से पहल नि.लि. बातों को जानना जरूरी होता हैं–

1. क्या स्वयं का व्यवसाय शुरू करने के लिये किसी लाईसैन्स या सर्टिफिकेट की आवश्यकता होती है?

2. लाईसैन्स या सर्टिफिकेट प्राप्त करने की क्या शर्तें और नियम हैं?

3. नियुक्तिकर्त्ता के मानक और कानूनी औपचारिकताएँ पूरी करने के लिये कितनी तैयारी की आवश्यकता होती हैं?

4. उपरोक्त औपचारिकताएँ पूरी करने के लिये कितना समय लगता है?

5. क्या किसी रोजगार में प्रवेश के लिये कितना समय लगता है?

पदोन्नति के लिये अवसर :– किसी व्यवसाय या रोजगार में प्रवेश से पूर्व यह जानना अति आवश्यक हाता है कि पदोन्नति के अवसर क्या हैं? उस व्यवसाय में निरीक्षण किस प्रकार किया जाता है ? व्यवसाय के इन पक्षों में निम्न सूचनाएं भी शामिल की जाती हैं–

1. किसी व्यवसाय में कार्यरत कर्मचारी कितने लोगों को पदोन्नति मिलती है तथा उनके पद का नाम क्या होता है ?

2. किसो व्यवसाय की प्रगति के लिये वांछित अनुभव, शैक्षिक योग्यताएं, रोजगार की अवधि के बारे मे जान लेना।

3. उन व्यवसायों के बारे में जानना जिनमें पदोन्नति के माध्यम से प्रवेश होता है।

वेतन और अन्य सुविधाएं :– किसी व्यवसाय के चयन से पहले ध्यान इस बात की ओर जाता है कि वेतन कितना होगा ? तथा अन्य लाभ, सुविधाएं और भत्ते क्या होगे ? इनके अतिरिक्त नि.लि. सूचनाएं भी शामिल की जानी चाहिएँ–

1. वार्षिक वेतन – वृद्धि क्या होगी ?

2. कुल वेतन कितनी है ?

3. वेतन का तरीका क्या है– दैनिक, साप्ताहिक या मानसिक ?

4. अन्य भत्तों का विवरण क्या है ?

5. पैंशन के बारे में सूचना। इत्यादि।

व्यवसाय का इतिहास :– व्यवसाय के इतिहास को जानना बहुत आवश्यक है व्यवसाय या रोजगार का इतिहास व्यवसाय की अवधि और स्थिरता के बारे में अतगत कराता है। इसके इतिहास से यह भी पता चलता है कि क्या व्यवसाय प्रगतिशील है या पश्चगामी ।

कार्य के लिये सामग्री :– व्यवसाय का यह पक्ष भी आवश्यक है कि व्यक्ति को किस प्रकार की सामग्री के साथ कार्य करना होगा तथा क्या यह व्यक्ति के स्वास्थ्य पर बुरा असर तो नहीं डालती ? क्योंकि कई बार जिस सामग्री के साथ व्यक्ति कार्य करता है तो वह उसके स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती है।

कुछ अन्य पक्ष :– उपरोक्त अग्रलिखित व्यवसाय के कुछ पक्षों के अतिरिक्त कुछ अन्य पक्ष भी होते हैं–

1. किसी व्यवसाय में वांछित प्रशिक्षण अर्थात्–व्यवसाय में प्रवेश के समय प्रशिक्षण की अवधि तथा प्रशिक्षण का स्वास्थ्य ?

2. कार्य की निमितता अर्थात् क्या कार्य कुछ महीनों के लिये है या पूरे वर्ष भर के लिये ?

3. क्या किसी व्यवसाय के लिये अनुभव आवश्यक है या उस व्यवसाय में कोई ऐसी पूर्व शर्त नहीं ?

4. किस व्यवसाय में कर्मचारियों की संख्या अधिकतम है ?

5. किस व्यवसाय में कर्मचारियों की संख्या अधिकतम है ?

6. व्यवसाय में किस प्रकार का संगठन है? क्या यह भागीदारी में हैं या अकेले का है? क्या व्यवसाय संयुक्त कम्पनी है ?

कार्य के लाभ और हानियॉ :– किसी व्यवसाय का चयन करते समय, यह सोचना भी आवश्यक होता है कि उसके लाभ और हानियॉ क्या होते हैं ? कर्मचारियों के ये विचार जानना आवश्यक होता है कि क्या वे उस व्यवसाय को पसंद करते हैं या नहीं? क्या उस व्यवसाय में 'ओवर–टाईम' प्रणाली है या नहीं? क्या कार्य कर्टन के घंटे बहुत अधिक हैं ? क्या उसमें अवकाश या मैटरनिटी–अवकाश की सुविधया हैद्य क्या नियुक्ति 'सीजनल' या अनियमित हैं? क्या वांछित कौशल किन्हीं और व्यवसायों में स्थनान्तरण योग्य हैं? क्या कार्य करने की परिस्थितियॉ कठोर हैं? मार्गदर्शक को इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि किसी व्यवसाय में किस प्रकार की दुर्घटना या बिमारियॉ हो सकती है।

नियुक्ति का स्थान :– व्यवसाय के सभी पक्षों में से यह जानना अति अवश्य है कि नियुक्ति का स्थान कौन सा होगा ? व्यवसाय में चयन के बाद उसे किस स्थान पर नियुक्त किया जा सकता है ? उस स्थान का मौसम, पानी, तापमान, खाना–पीना, भाषा तथा भौगोलिक परिस्थितियॉ क्या हैं ? यदि किसी व्यक्ति को ये सभी सूचनाऍं भाती हैं, तभी उस व्यवसाय का चयन किया जाना चाहिये।

इस प्रकार हम देखते हैं कि व्यवसाय यया रोजगार को चुनने से पहले उसके विभिन्न पक्षों पर बहस करनी बहुत आवश्यक है अन्यथा कुसमायोजन का भय बना रहेगा।

निष्कर्ष :– वर्तमान समय में विभिन्न प्रकार के व्यवसायों की अधिकता के कारण रोजगार का चुनाव एक महत्वपूर्ण समस्या हैं। गलत चुनाव के कारण युवाओं का भविश्य अंधकारमय हो जाता है और उनकी जीवन संतुष्टि नहीं हो पाती है और वो एक कुठा के शिकार होते है। अतः रोजगार सूचनाऍं इस समस्या से निपटने के लिए एक सशक्त हाथियार हैं। रोजगार सूचना की प्राप्ति के कारण युवा उत्तम व्यवसाय का चुनाव कर पाते हैं। अतः रोजगार सूचना जीवन का अभिन्न अंग हैं।

संदर्भ :–

1. ओबेराय एस. के. (2007) कैरियर निर्देशन एवं कैरियर सूचना, इंटरनेषनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ, पृं. सं.– 35.48

2. त्रिपाठी एम.एस.(2007) शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श. ओमेगा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, पृ.सं. 33–41

3. पाण्डेय वी. (2017) कैरियर निर्णय क्षमता एवं व्यावसायिक आकांक्षाऍं एस आर एफ पब्लिकेशन्स, जबलपुर पृ.सं. 14–18

ग्रामीण अंचलों में मोबोलाईजेशन सुविधा का ग्रामीण विकास परियोजना में भूमिका का अध्ययन

डॉ. रमेश मंगल, पूर्व प्राचार्य (वाणिज्य) प.म.ब.गुजराती व श्री वैष्णव महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)
विभा गोयल, शोधार्थी आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज इन्दौर (म.प्र.)

भारत का आर्थिक विकास ग्रामीण विकास में ही निहित हैं। ग्रामीण अंचलों का विकास किये बिना भारत विश्व आर्थिक विकास की दौड़ में अग्रणी नहीं हो सकता हैं। भारत की पंचवर्षीय योजनाओं में ग्रामीण विकास की नियोजन प्रणाली विकास की नियोजन प्रणाली में सदव अग्रणी रही हैं। ग्रामीण विकास परियोजनायें जिनके लिये प्रारंभ की गई हैं उन ग्रामीण जनता द्वारा सक्रिय रुप से भाग लिया जा रहा हैं क्योंकि योजनाओं के प्रति चेतना दिन प्रतिदिन जागृत हो पायी हैं। सरकार द्वारा योजनाओं को ग्रामीण लोगों में जटिल प्रक्रिया को सरलीकरण द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है व जनसहयोग बैकिंग संस्थाओं व विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा अभिप्रेरित कर पूर्णरुपेण लाभ उठाने हेतु योजनाओं को सफल बनाया जा रहा हैं। जिसमें क्रेडिट मोबोलाईजेशन सुविधा परियोजना का प्रमुख योगदान है जिसके बारे में निम्न में जानेगें।

क्रेडिट मोबोलाईजेशन स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना का एक प्रमुख घटक हैं। स्व सहायता समूहों को ग्रेडिंग के जरिये सूचीबद्ध करके चिह्नित बैकों द्वारा क्रेडिट मोबोलाईजेशन सुविधा मुहैया कराई जाती हैं। राशि का बंटन स्वसहायता समूहों को किश्तों के रुप में किया जाता हैं। यही कारण है कि एस.जी.एस.वाय. के अंतर्गत बैंकों की व्यापक भागीदारी होती हैं। बैंकें स्वसहायता समूहों को ऋण सुविधा मुहैया कराने से लेकर कई महत्वपूर्ण कार्यों जैसे – क्लस्तरों का चयन, आधारभूत ढांचा आयोजन, स्वरोजगारियों का चयन, क्षमता निर्माण एवं ऋण पूर्व एवं पश्चात् की कार्यवाहियों में सक्रिय रुप से भागीदारी करती हैं।

प्रत्येक वित्तीय वर्ष के प्रारंभ में क्रेडिट मोबोलाईजेशन की सीमा का एक लक्ष्य निर्धारित किया जाता हैं एवं इस लक्ष्य को पाने का एक न्यूनतम अनिवार्य कार्य होता है जो कि जिला विकास एजेन्सी द्वारा किया जाता हैं। इस निर्धारित लक्ष्य से ऊपर दिये गये ऋणों को एक सकारात्मक उपलब्धि के रुप में देखा जाता हैं। स्वसहायता समूहों को उनकी चयन प्रक्रिया के समय स्थानीय बैंकों के सम्पर्क में लाया जाता है ताकि वे संबंधित बैंक की सेवा क्षेत्र शाखा के अधीन अपना बचत खाता खुलवा सकें। इसके दो फायदे होते हैं। पहला यह कि स्वसहायता समूह बैंकिंग व्यवहार एवं उससे मिलने वाले विभिन्न वित्तीय अवसरों से अवगत हो जाते हैं एवं दूसरा यह कि संबंधित बैंकर स्वयं उन स्वसहायता समूहों से परिचित हो जाते हैं। इन दोनो पक्षों के मध्य जितनी शीघ्रता से सम्पर्क बनेंगे, भविष्य में वे परस्पर उतने ही लाभदायक सिद्ध होते हैं।

विगत वर्षों के उन्नति का अध्ययन :– विगत दशकों में स्वसहायता समूहों के प्रत्यक्ष आँकडे शोधार्थी द्वारा प्राप्त किये गये है जो शोध क्षेत्र में किये गये जिलों के ग्रामीण जनता के साक्षात्कार के आधार पर संपूर्ण रुप से प्राप्त हुए हैं वर्ष 2000 से वर्ष 2008 में एवं वर्तमान स्थिति में ग्रामीण जनता द्वारा परियोजना का 70 प्रतिशत लाभ प्राप्त ग्रामीण विकास के रुप में किया गया है जिसके परिणाम स्वरुप ग्रामीण क्षेत्र प्रगति की ओर अग्रसर हैं।

अंचल में बैंकिंग व्यवस्था :– प्रायः अंचल के जिलों के अंतर्गत सभी बैंकों ने कृषि व अकृषि कार्यों हेतु ऋण प्रदान किया हैं। जिसमें सबसे अधिक ऋण कृषि व अकृषि कार्यों में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों ने उपलब्ध कराया हैं एवं जिला सहकारी बैंकों द्वारा तुलनात्मक रुप में कम किया गया है किन्तु दोनों ही बैंकों द्वारा ग्रामीण उत्थान हेतु सुविधा उपलब्ध करायी जिसका उपयोग ग्रामीण हितकारी परियोजनाओं में सफलतापूर्वक निवर्हन किया जा रहा हैं।

अंचल में वार्षिक साख योजना के अंतर्गत वर्तमान में वर्षानुसार क्रेडिट मोबोलाईजशन परियोजनाओं के अध्ययन से पता चलता है कि योजना में बैंकों द्वारा लक्ष्य तथा उपलब्धि में निरन्तर वृद्धि को प्राप्त किया गया। किसानों एवं अन्य ग्रामीण जनता द्वारा ऋण परियोजनाओं का उपयोग भारी मात्रा में किया जा रहा है एवं उत्पादन में वृद्धि ली जा रही हैं।

अंचल में अनुकुल जलवायु मिट्टी एवं सिंचाई के पर्याप्त साधन पाये गये हैं। ग्रामवासियों को ग्रामीण विकास को विकसित करने में बैंकों की पूर्ण मदद से ग्राम विकास को बल दिया गया हैं। साथ ही बैंकों द्वारा ऋण की मात्रा में निरंतर वृद्धि पाई गई इससे स्पष्ट होता है कि प्रस्तत अध्ययन से ज्ञान प्राप्त होता है कि ग्रामीण विकास के आधुनिकीकरण एवं तकनीकी वृद्धि में बैंकिंग संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका विद्यमान रही हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में सुझाव :– शोधार्थी द्वारा किये गये शोध अध्ययन में ग्रामीण विकास परियोजनाओं के सफल क्रियान्वयन क अध्ययन में शोधार्थी द्वारा सुझाव हेतु बिन्दु निम्न हैं –

1. योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु पारस्परिक सहयोग की आवश्यकता।
2. निर्धन ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या नियंत्रण हेतु सुझाव प्रदान करना।
3. योजनाओं के उचित मूल्यांकन हेतु कार्यकारिणी बनाना।
4. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क परियोजना का उल्लेखनीय क्रियान्वयन करना।
5. योजनाओं के प्रचार–प्रसार प्रणाली को सुचारु रुप से व्यवस्थित करवाना।
6. कुशल व प्रशिक्षित व्यक्तियों का चयन बैंकिंग संस्थाओं में करवाना।
7. आरक्षण को हटाकर योग्य व्यक्तियों का चुनाव करना।

उपरोक्त सुझाव शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में महत्वपूर्ण हैं व ग्रामीण विकास परियोजनाओं को सफलतम व श्रेष्ठतम बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं। इसलिए कहा गया हैं :–

जब बनेंगे आदर्श ग्राम।

खुशहाल होगी देश की आवाम।।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

ग्रामीण विकास परियोजना	:	यू.सी. गुप्ता, प्रतीक वर्मा
ग्रामीण विकास कार्यक्षेत्र	:	कुरुक्षेत्र योजना
वार्षिक व मासिक पत्रिका	:	इंडिया टूडे, कुरुक्षेत्र, ग्रामीण विकास परियोजना
दैनिक पत्रिका का संकलन	:	पत्रिका, नईदुनिया, दैनिक भास्कर

छिंदवाड़ा के नामकरण का इतिहास : एक अध्ययन्

सुदेश कुमार मेहरोलिया
(सहा – प्राध्यापक) शा. श्याम सुंदर अग्रवाल पी.जी. कॉलेज, सिहोरा

जिले का सामान्य परिचय :– सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला के आंचल में बसे खूबसूरत घने वनों से आच्छादित यह जिला सुरम्य वादियों और कलकल बहती नदियों के बीच अपनी बहुरंगी प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक छटा के लिये प्रसिद्ध है। छिंदवाड़ा की इस धरती ने गोवली , गोंड और मराठा शासको का पराक्रम देखा है। इसे प्रकृति ने बेहद सुंदर उपहारों से संवारा है। महादेव मेला, नागद्वारी मेला, पांढुर्ना का विश्व पसिद्ध गोटमार मेला इसकी पहचान है। यहां तामिया जैसा रमणीय हिल स्टेशन है, तो पातालकोट जैसी प्रकृति की अद्भुत संरचना। पेंच और कन्हान की घाटियां काला सोना उगलती आ रहीं हैं। छिंदवाड़ा जिला मध्यप्रदेश के दक्षिण में अवस्थित है। मूलतः यह जिला आदिम जातियों का निवास स्थान है। यहाँ गोंड, राजगोंड, गोंडगवारी, अगरिया, असुर, भीमा, भूता, ओझा, भारिया, कोरकू ,परधान, मवासी, इत्यादि अनुसूचित जनजातियां पायी जाती हैं।[1]

छिंदवाड़ा मध्यकाल में देवगढ़ के गोंड राज्य के अधीन था। देवगढ़ का गोंड राज्य सतपुड़ा के अंचल में सोलहवीं सदी के मध्य में अस्तित्व में आया और यह अठारहवीं सदी के मध्य तक विद्यमान रहा। लगभग पौने दो सौ साल के अपने इतिहास में देवगढ़ राज्य पहले गढ़ा – मण्डला के गोंड राज्य के अधीन रहा और 1564 ईस्वी में गढ़ा पर अकबर की विजय के उपरांत यह मुगल साम्राज्य का हिस्सा हो गया।[2] मुगल साम्राज्य के सुदूर दक्षिण में दुर्गम इलाके में स्थित देवगढ़ के शासक अपनी स्थिति का फायदा उठाकर मुगल साम्राज्य की उपेक्षा करते रहे, जिसका दण्ड उन्हें भुगतना पड़ा। मुगल साम्राज्य के पतन के समय मराठों से देवगढ़ का सम्पर्क हुआ और नागपुर के भोंसला शासक ने ही उन्हें सत्ताच्युत किया।[3] देवगढ़ किले के खण्डहर आज छिंदवाड़ा जिला मुख्यालय से 40 किलोमीटर दूर दक्षिण–पश्चिम में मोहखेड़ ब्लॉक के पास सतपुड़ा पर्वत की एक पहाड़ी पर स्थित है। देवगढ़ का मुख्यालय पहले हरया या हरयागढ़ था, जो छिंदवाडा जिले का एक ग्राम है।[4]

नामकरण :– इस जिले का नाम छिंदवाड़ा क्यों पड़ा ? इस सम्बन्ध में विद्वान इतिहासकारों के अलग – अलग मत हैं। पं. भागवत प्रसाद शुक्ला द्वारा लिखित ''छिंदवाड़ा छवि'' में प्रकाशित लेख में लिखा है कि – सिंधिया के यहां निवास के कारण इसे "सिंधियावाड़ा" कहते थे। कुछ समय पश्चात "सिंधियावाड़ा" बदलकर "छिंदवाड़ा" हो गया। सिंधिया के यहां निवास करने का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलता इसलिये इसका कभी "सिंधियावाड़ा" नाम था, यह माना नहीं जा सकता।[5]

लगभग 300 वर्ष पूर्व सम्राट अकबर के समकालीन मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा "पद्मावत" की रचना की गई थी। इस काव्य की टीका हिन्दी के धुरधंर भाश्यकार और विद्वान लाला भगवानदीन ने की है। जायसी ने "पद्मावत" के कथानायक राजा रतनसेन की चित्तौड़गढ़ से सिंहल द्वीप (श्रीलंका) की यात्रा "सिंघदुवारा" द्वारा कराई ह। विद्वान भाश्यकार ने इस "सिंघदुवारा" (सौं दुआरा) को वर्तमान छिंदवाड़ा बतलाया है।[6] जबकि कविता कोश में भाश्यकार ने "सिंघदुवारा" को छिंदवाड़ा बताने पर प्रष्न चिन्ह लगाया है।

छिंदवाड़ा में सिंहों की बाहुल्यता के कारण इस नगर में प्रवेश करना सिंह के द्वार पर पहुंचना माना जाता था। इसका रूप भी सिंह के सामान है, इसलिये इसका "सिंहद्वारा" नाम सार्थक और उपयुक्त प्रतीत होता है। समय परिवर्तनशील है। समय के परिवर्तन के साथ ही साथ "सिंहद्वारा" के "सिंह" का "छिन्द" और "द्वारा" का

"वाड़ा" इस प्रकार " छिंदवाड़ा" बन गया।[7] शासकीय इतिहास में यहां छींद वृक्षों की बहुलता बतलाई जाती है, इसलिये इस जिले का नाम "छींदवाड़ा" पड़ा। "छींदवाड़ा" से यह परिवर्तित होकर "छिंदवाड़ा" हो गया। परन्तु यहां छींद वृक्षों की बहुलता नहीं पायी जाती, इसलिये यह धारणा भी अमान्य प्रतीत होती है।[8]

पं. भागवत प्रसाद शुक्ला के द्वारा यहां छींद वृक्षों की बहुलता सम्बंधी धारणा को अमान्य करना सही हो सकता है, लेकिन छींद वृक्षों का इसके नामकरण से गहरा सम्बन्ध है। शासकीय दस्तावेजों में इसके नामकरण का आधार छींद वृक्षों को ही माना गया है।[9] सिंहों की बाहुल्यता वाला तर्क बिल्कुल भी स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि प्राचीन काल अथवा मध्य काल में इस जिले में सिंह पाये जाने के कोई भी साक्ष्य हमें प्राप्त नहीं होते। गोंडकालीन इतिहास में भी यहां वनों में सिंह पाये जाने के कोई प्रमाण प्राप्त नहीं होते। राजा रतनसेन द्वारा सिंहल द्वीप की यात्रा "छिंदवाड़ा" से होकर बताना भी संदेहास्पद लगता है। जायसी ने 'पदमावत' की रचना रानी पद्मनी के काफी समय लगभग 237 सालों बाद की थी। शेरशाह सूरी सन् 1540 – 1545 ई. तक जब दिल्ली का सुल्तान था, उस समय जायसी ने 'पदमावत' की रचना की थी। जैसा की उसने लिखा है :

शेरशाह दिल्ली सुल्तानू चारहु खंड तपै जस भानू।।

राजस्थान के अग्रणी इतिहासकार डॉ. गौरीशंकर ओझा आदि अधिकांश आधुनिक इतिहासकारों ने इस कहानी को अस्वीकार कर दिया है।[10] एक और लेखक इंद्रचन्द्र नारंग ने" पदमावत का आधार" नामक ग्रंथ लिखा है। इसमें श्री नारंग ने पदमावत पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की व्याख्या का विस्तृत विश्लेषण किया है। श्री नारंग ने इतिहासकार डॉ. गौरीशंकर ओझा का समर्थन किया है और पदमावत पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की व्याख्या एवं दावों को प्रमाण देकर खारिज किया है ।[11] यदि दक्षिण जाने का मार्ग यहां से होता तो इतिहास एवं अन्य साहित्यिक कृतियों में भी इस जिले के नाम का उल्लेख अवश्य किया जाता।

कई विद्वानों ने पदमावत पर व्याख्या लिखी हैं, उनमें श्री वासुदेवशरण अग्रवाल काशी हिन्दु विश्वविद्यालय का नाम बहुत प्रसिद्ध है। आपने वर्ष 1955 ईस्वी में "मलिक मोहम्मद जायसी : पदमावत" शीर्षक से रचना की। वर्ष 2013 ईस्वी में आपने पदमावत पर मूल एवं संजीवनी व्याख्या प्रस्तुत की है। वर्ष 2013 में लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद द्वारा इसका प्रकाशन किया गया। श्री वासुदेवशरण अग्रवाल की इस कृति को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह रचना ज्यादा प्रमाणिक एवं सटीक है।

मलिक मोहम्मद जायसी का 'पद्मावत' :– उत्तर प्रदेश में अवध में रायबरेली के समीप जायस नामक कस्बे के निवासी मलिक मोहम्मद जायसी ने सन् 1540 ई. में अपना प्रेमाख्यान 'पद्मावत' महाकाव्य लिखा। इसमें चित्तौड़ के राणा रतनसिंह द्वारा सिंहल द्वीप की सुन्दरी पद्मनी से प्रेम करने और उससे विवाह करने का वर्णन है। इसके लिये रतनसिंह ने लंका में बारह वर्ष बिताये।[12] अधोलिखित पंक्तियाँ 'पद्मावत' के ''जोगी'' खण्ड से उद्धृत की गयी हैं।

ततखन बोला सुआ सरेखा। अगुआ सोइ पंथ जेइँ देखा।1।

सो का उडै न जेहि तन पाँखू। लै सो परासहिं बूड़ै साख् ।2।

जस अंधा अंधे कर संगी। पंथ न पाव होइ सहलंगी।3।
सुनु मत काज चहसि जौं साजा। बीजानगर बिजैगिरि राजा।4।

पूँछु न जहाँ कुंड और गोला। तजु बाएँ अँधियार खटोला।5।

दक्खिन दहिने रहै तिलंगा। उत्तर माँझें गढ़ा खटंगा।6।

माँझ रतनपुर सौंह दुआरा। झारखंड दै बाँऊ पहारा।7।

आगें पाउँ ओडैसा बाएँ देहु सो बाट।

दहिनावर्त लाइ कै उतरु समुंद्र के घाट।।12।13।।[13]

अर्थ :–

1. उसी समय चतुर सुग्गे ने कहा अगुवा वही होता है, जिसने मार्ग स्वयं देखा हो।

2. जिसके शरीर में पंख नहीं क्या वह उड़ सकता है ? वह तो उस शाखा की तरह है, जो पत्ते को भी ले डूबती है ।

3. वह ऐसा है, जैसे अंधा अंधे का साथी हो और सहयात्री बनकर दोनों ही मार्ग न पाते हों ।

4. जो कार्य सिद्धि चाहता है तो मेरी सलाह सुन। हे राजा ,विजयनगर बीजागढ़,।

5. गोला और कुण्ड जहाँ है, उसकी बात न पूछना। अँधियार खटोले (दमोह – सागर) को बाँएं छोड़ते हुए आगे बढ़ना।

6. दक्षिण में तिलंगाना रह जाएगा। उत्तर की ओर बीच में गढ़ा कटंगा है।

7. जाते हुए बीच में रतनपुर पड़ेगा। उसके सामने द्वार (महानदी की घाटी) ह। झारखण्ड के पहाड़ तुम्हारे बाँएं रह जाएँगे।

8. तुरन्त आगे उड़ीसा में पैर पहुँचते हैं, किन्तु उस मार्ग को बाँएं छोड़कर दाहिने हाथ कुछ थोड़ा घूमकर समुद्र के घाट जा उतरना।

उत्तर माँझें गढ़ा खटंगा :– इस पंक्ति का अर्थ नक्शे में स्पष्ट हो जाता है। गढ़ा मंडला के बीच से होकर मार्ग पहले उत्तर की ओर जाता था, जहाँ अब कटनी है और वहाँ से घूमकर फिर पूरब–दक्षिण की ओर विन्ध्य के पूर्वी भाग मेखला पर्वत में सोन नदी की घाटी से होता हुआ रतनपुर जा निकलता था। बाईं ओर जहाँ अँधियार खटोला (दमोह – सागर) को छोड़ने का जिक है, वहीं दाहिनी ओर उस मार्ग को भी छोड़ना आवश्यक था, जो जबलपुर से सीधे दक्षिण में बालाघाट, गोंदिया, नागपुर होता हुआ बरार की ओर जाता था। सुधाकरजी ने लिखा है कि मध्यकालीन भूगोल में बरार, तिलंगाना के नाम से प्रसिद्ध था। जायसी ने इसी के लिए लिखा है – "दक्खिन दहिने रहै तिलंगा" आईन–ए– अकबरी के अनुसार तिलंगाना सरकार पश्चिमी बरार में थी (आईन–ए–अकबरी)। अगला मार्ग रतनपुर से शक्ति–रायगढ़ होता हुआ उड़ीसा की ओर बढ़ता है। वहीं पर जायसी ने लिखा है कि इस मार्ग के ठीक बाँईं ओर झारखण्ड के पहाड़ थे। जैसा आचार्य रामचंन्द्र शुक्ल ने लिखा है ,यह सरगुजा या छोटा नागपुर का घना इलाका या पहाड़ी पठार था, जिसे आज भी बीच में छोड़कर उत्तर और दक्षिण होते हुए उड़ीसा की ओर दो मार्ग बढ़ते हैं। रतनसेन दक्षिण मार्ग पर है, और जैसे ही वह महानदी के तट पर पहुँचता है वैसे ही मानों उड़ीसा में उसका पैर पहुँच जाता है। किन्तु महानदी के उत्तर में जो मैदान है उसे बाँए रखते हुए दाहिने मुड़कर उड़ीसा के समुद्र तट पर पहुँचना होता था। यही प्राचीन मार्ग था। [14]

उपरोक्त व्याख्या के विश्लेषण करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि पं भागवत प्रसाद शुक्ल द्वारा छिंदवाड़ा छवि में पदमावत काव्य की टीका का उल्लेख हिन्दी के धुरधंर भाश्यकार और विद्वान लाला भगवानदीन की है, जिसमें उन्होंने सिंघदुआरा को छिंदवाड़ा बताया है। जबकि वासुदेवशरण अग्रवाल ने जायसी की मूल कृति की व्याख्या की है जिसमें शब्द सिंघदुआरा नहीं बल्कि "सौंह दुआरा" आया है, जिसका आशय महानदी की घाटी से है न की छिंदवाड़ा से। पं भागवत प्रसाद शुक्ल ने सिंघ दुआरा का अपभ्रंश छिंदवाड़ा होना बताया है जो कि स्वीकार नहीं किया जा सकता। हिन्दी भाषा में अपभ्रंश के अपने नियम हैं।

एक स्थानीय बुजुर्ग स्व. रामदयाल गोदरे (110वर्ष) जो कि इस क्षेत्र के सबसे पुराने निवासियों में से एक थे, ने बताया था कि हाथियों के व्यापारी रतनसिंह रघुवंशी द्वारा हाथियों, घोडों एवं अन्य पशुओं को रखने के लिये एक बाड़े का निर्माण छींद वृक्ष के तनों एवं पत्तियों से किया गया था, ऐसा मेरे पिता ने मुझे बताया था।[15] हाथियों के व्यापारी रतनसिंह रघुवंशी द्वारा बाड़े के भीतर बाद में हाथियों के

लिये एक मिट्टी के बड़े हाथीखाने का निर्माण कराया गया था। बहुत मजबूत हाने के कारण छींद वृक्ष के तनों का उपयोग हाथियों को जंजीरों से बांधने के लिये भी किया जाता था।

अनुमान है की छींद वृक्ष से निर्मित बाड़े के कारण लोग इस क्षेत्र को "छींदबाड़ा" कहने लगे। धीरे – धीरे लोग इस क्षेत्र में आकर बसने लग और बाद में इस गांव का नाम "छिंदवाड़ा" पड़ा। यह अनुमान इसके नामकरण की ऐतिहासिक सत्यता के बिल्कुल करीब लगता है। आज भी स्थानीय लोग इस क्षेत्र को बाड़ा कहकर संबोधित करते हैं, जोकि इसके नामकरण का सबसे बड़ा प्रमाण है। श्री ललता तिवारी के घर के बाजू छोटा बाजार के पास काली मिट्टी का एक बहुत बड़ा टीला था, जिसे "डीह" कहते थे। अक्टुबर, सन् 1985 दीवाली के पूर्व आसपास के लोग मिट्टी बड़ी मात्रा में यहां से खोदकर ले जा रहे थे,कि अचानक जमीन के भीतर से सोने एवं चांदी के सिक्के निकलने प्रारंभ हुये और देखते ही देखते यह बात पूरे क्षेत्र में जंगल में आग की तरह फैल गई। सिक्कों की चाह में लोगों ने पूरे मिट्टी के टीले को खोद डाला। गहराई तक खुदाई करने पर यहां भारी मात्रा में छींद के तनों के रेशे भी निकले थे। इस स्थान पर रहने वाले कई लोगों का कहना है कि छपाई के लिए जब उन्होंने यहां से मिट्टी लेकर गये थे जिसमें बड़ी मात्रा में छींद के तनों के रेषे जो की काफी गल गये थे, प्राप्त हुये थे। इससे इस बात का अनुमान लगाया जा सकता है कि या तो यहां प्राकृतिक रूप से छींद वृक्ष लगे हुये हों या बड़ी संख्या में छींद वृक्ष के तनों का उपयोग बाड़ा निर्माण के लिये किया गया हो।

छिंदवाड़ा का सर्वप्रथम बसने वाला क्षेत्र रघुवंशीपुरा था। ऐसी मान्यता है कि गांव से विकसित हुये इस नगर की स्थापना अयोध्या (फैजाबाद,उ.प्र.) से पधारे हाथियों के व्यापारी रतनसिंह रघुवंशी द्वारा की गई थी। उसने यहां के गौली प्रधान की हत्या कर एक ऊँचे भू–भाग पर एक जीवित बकरे को छोड़ा, बकरा जहाँ रुका वहीं उसे जीवित गाड़ कर उसके ऊपर एक चबूतरे का निर्माण किया गया।[16] चबूतरे पर यहां के लोग पूजा करते हैं। इसके पास ही रतनसिंह रघुवंशी द्वारा बनवाया गया मिट्टी का किला है, जिसमें हाथियों को रखा जाता था। इसी कारण यह स्थान हाथीखाना कहलाता है।[17] वर्तमान में एक राजपूत परिवार निवासरत है। इस हाथीखाना के स्वरूप में बहुत परिवर्तन कर दिये गये हैं। रतनसिंह रघुवंशीपुरा द्वारा बसाये जाने के कारण इस क्षेत्र का नाम "रघुवंशीपुरा" पड़ा। यह क्षेत्र छिंदवाड़ा शहर का सर्वप्रथम बसने वाला क्षेत्र है। रतनसिंह रघुवंशीपुरा द्वारा बनाया गया मिट्टी का किला एवं चबूतरा वर्तमान में परिवर्तित रूप में अस्तित्व में

निष्कर्ष –: उपरोक्त अध्ययन् से इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि छिंदवाड़ा के नामकरण में छींद वृक्षों तथा बाड़ा शब्द का अत्यधिक महत्व है। मेरे द्वारा किये गये "छिंदवाड़ा का नामकरण – सर्वेक्षण (1997)" से भी मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि हाथीखाने का भवन बनने के पूर्व बाड़े का निर्माण किया गया। यह इमारत इतनी बड़ी नहीं थी कि इसमें 3 या 4 हाथी से अधिक रखे जा सकें।

अतएव यह निश्चित है कि अधिक हाथियों एवं अन्य पशुओं को रखे जाने हेतु एक बड़े बाड़े का निर्माण किया गया होगा तथा इसे घेरने के लिये छींद वृक्षों के तनों, शाखाओं एवं पत्तियों का अधिक मात्रा में उपयोग किया गया होगा। इस कारण लोग इसे "छींद का बाड़ा" कहते रहे होंगे। कालांतर में इस स्थान का नाम छिंदवाड़ा पड़ा। इस विषय में और अधिक गहराई से शोध किए जाने की तथा नवीन तथ्यों के खोजे जाने की आवश्कता है।

संदर्भ –:

1. मध्यप्रदेश सामान्य अध्ययन्, पृष्ठ कं. 65, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा, 1990
2. मध्यप्रदेश दर्शन, पृष्ठ कं. 165, आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय 1957
3. मिश्र डॉ. सुरेश, मध्यप्रदेश के गोंड राज्य, पृष्ठ कं. 134, म. प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2000
4. वही, पृष्ठ कं. 135.
5. शुक्ल भागवत प्रसाद, छिंदवाड़ा छवि, पृष्ठ कं. 5, छिंदवाड़ा 1931

6. तिवारी कपिल देव, छिंदवाड़ा दर्पण, पृष्ठ कं. 107, अरूणोदय प्रकाशन नई दिल्ली, 2013
7. शुक्ल भागवत पसाद, पृष्ठ कं. 5, छिंदवाड़ा छवि, 1931
8. सतपुड़ा आब्वजर्वर, शर्मा शिवनारायण (संपादक), पृष्ठ कं. 01,छिंदवाड़ा, वर्ष 1997.
9. नारंग इंद्रचंद्र, पदमावत का आधार, पृष्ठ कं. 56, हिन्दी भवन इलाहाबाद,
10. सतीष चंद्र , मध्यकालीन भारत, पृष्ठ कं. 84, जवाहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्युटर्स ,2000
11. नारंग इंद्रचंद्र, पदमावत का आधार, पृष्ठ कं. 56, हिन्दी भवन इलाहाबाद
12. लुनिया,बी. एन., मध्यकालीन भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृष्ठ कं. 382, कमल प्रकाशन, इंदौर, 1992.
13. अग्रवाल वासुदेवशरण, पदमावत, पृष्ठ कं. 133, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, 2013.
14. वही, पृष्ठ कं. 134.
15. साक्षात्कार, गोदरे भुवनलाल पिता रामदयाल 7 जुलाई, 1996, छिंदवाड़ा
16. छिंदवाड़ा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, वही पृष्ठ कं. 01, 1995
17. दैनिक भास्कर छिंदवाड़ा, दिनांक 28 मई, 2003

शहरी एवं ग्रामीण बाजारों में आधुनिक विज्ञापन का समावेश (सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टिकोण से)

मनीष कुमार कोष्टा
अनुसंधत्सु, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

मानव एक सामाजिक प्राणी है। विज्ञापनकर्ता हमेशा मानव मूल्यों पर अमल करता है। विज्ञापनकर्ता विज्ञापन के माध्यम से उपभोक्ता को प्रभावित करने की कोशिश करता है। जो कि समाज का ही हिस्सा है। इसलिए किसी भी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था का आधार स्तंभ होता है, क्योंकि विज्ञापन आर्थिक प्रक्रिया की महत्वपूर्ण कड़ी है। विज्ञापन आर्थिक लाभ को प्रोत्साहित करने के लिए उपभोक्ता को सूचनायें देता है, उत्पादन की बिक्री बढ़ाता है, वस्तु की गुणवत्ता बनाये रखता है, रोजगार बढ़ाता है, हमारी जीवन–शैली को प्रभावित करता है तथा योग्यताओं को बढ़ावा देता है। आज का युग विज्ञापन का युग है, हम विज्ञापन के प्रभाव को समाज पर स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

ग्रामीण एवं शहरी दोनों ही स्तरों पर किसी भी विज्ञापन कार्यक्रम की सफलता के पीछे जो कारण विद्यमान हैं उनमें से एक यह भी है कि विज्ञापन कार्य्रक्रम तैयार करने स पहले विज्ञापनकर्ता ने कितने अच्छे और सुचारू रूप से बाजार, वस्तु, उपभोक्ता, मीडिया आदि संबंधित विषयों पर जानकारी ली। अध्ययन और अन्वेषण किये जो बड़े निर्माता बाजार में प्रवेश करते हैं, वे बाजार अध्ययनों और बाजार में मौजूदा एवं संभावी उतार–चढ़ाव, माँग–पूर्ति से संबंधित स्थितियों को अनदेखा नहीं कर सकते। वास्तव में बाजार विश्लेषण और बाजार गणना ऐसी सुव्यवस्थित सोद्देश्य एवं संगठित गतिविधियाँ हैं, जो हर बड़े निर्माता और बिक्रेता को आधार एवं दिशा प्रदान करती है। इनके बिना न तो बाजार और वस्तु सबंधित निर्णय लिए जा सकते हैं और न ही उनमें संबंधित समस्याओं का समाधान संभव हो सकता है।

शहरी बाजारों की तुलना यदि ग्रामीण बाजारों से की जाये तो उसमें दोनों में जमीन–आसमान का अंतर दिखाई देता है। जहाँ शहरों में भगदड़ मची होती है वहीं गामीण क्षेत्रों में शांतिपूर्वक जीवन चलता है। शहरों की आर्थिक व्यवस्था ग्रामीणों की आर्थिक व्यवस्था से ज्यादा बड़ी होती है। इसका प्रमुख कारण शहरी आबादी का बहुत अधिक होना तथा वहाँ अत्यधिक बड़े पैमाने पर औद्योगिकीकरण का होना होता है। शहरों की आर्थिक स्थिति अच्छी होने के कारण यहाँ के बाजारों की स्थिति भी मजबूत होती है। यहाँ पर विलासिता की साम्रगियों का अंबार लगा होता है और इसलिए इनके विज्ञापन के प्रयास भी बहुत संख्या में करना होता है यहाँ के बाजारों में विविधतओं की बिलकुल भी कमी नहीं होती है। शहरों के अधिकतर लोग पढ़े लिखे होते हैं, इसलिए उनका सामाजिक जीवन स्तर अच्छा रहता है और इसलिए वहाँ पर किये गये विज्ञापनों में वो बात नजर आती है। अब यदि ग्रामीण बाजारों की बात की जाये तो पता चलता है कि वहाँ की कम आबादी व लोगों का कम पढ़ा लिखा होना ये दोनों बातें आर्थिक और सामाजिक पहलू को कमजोर करता है।

आज देश में सिर्फ शहरों में होने वाले विज्ञापन लगभग 200 करोड़ रूपये का वार्षिक व्यय हो रहा है जो दूसरे देशों की तुलना में बेशक कम है परंतु अपने आप में एक बड़ी राशि है। पिछल 4 दशकों के दौरान शहरी बाजारों के लिए होने वाले विज्ञापन व्यय में लगभग 200 गुना वृद्धि हुई है। विज्ञापन बाजार में वृद्धि के पीछे अनेक कारण विद्यमान हैं। सबसे बड़ा कारण है शहरों में बढ़ता औद्योगिक उत्पादन देश में सन् 1956 के बाद बनी उदार औद्योगिक नीतियां के परिणामस्वरूप औद्योगिक आधार में न केवल विविधता आई हैं वरन उसमें गुणात्मक और परिणामात्मक विकास भी हुआ है। कारखानों में उत्पादन बढ़ने के परिणामस्वरूप उसके लिए नये बाजारों को सृजित करने और नये ग्राहकों को आकर्षित करने की आवश्यकता पड़ी। य बाजार

स्थानीय न होकर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के थे। और इन बाजारों तक पहुँचने लिए नई माँग पैदा करना और अपना माल बेचने के लिए निर्माताओं ने जिस सबसे सस्ते और सुगम रास्ते का सहारा लिया वह था विज्ञापन।

शहरी बाजारों में विज्ञापन बाजार की वृद्धि के पीछे संचार सेवाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान है। भारत में आधुनिक डाक प्रणाली जो सन् 1837 में प्रारंभ हुई, अब देशों के सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था एक महत्वपूर्ण अंग बन गई है। सन् 1854 में देश में जहाँ केवल 700 डाकघर थे उनकी संख्या डेढ़ लाख से ऊपर हा गई है। दूरसंचार की सेवाओं में भी तेजी से विकास हुआ है। सन् 1948 में देश में केवल 321 टेलीफोन एक्सचेंज थे और कार्यरत टेलीफोन कनेक्सनों की कुल संख्या 82,000 थी इसके विपरीत लगभग 1988 तक टेलीफोन एक्सचेंजों की संख्या 12,930 हो गई थी फिर भी 90 क दशक में वायरलेस मोबाइल आ गये थे और इससे दूरसंचार में क्रांति आ गई। आज हर दूसरे व्यक्ति के पास मोबाइल है। शहरी बाजारों का इतना ज्यादा विकास होने का प्रमुख कारण इंटरनेट भी हो गया है। आज 3ळध्4ळ इंटरनेट और ब्राडबेंड इंटरनेट के जरिए बाजार में व्यवसाय करना अत्यंत आसान हो गया है और इसके माध्यम से विज्ञापन में भी जबरदस्त क्रांति आ चुकी है। विज्ञापन करने के तरीके बदल रहे हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से लेकर अब तक भारत के शहरी बाजारों में विज्ञापन के व्यापार में जो लगातार वृद्धि हुई है और स्वरूप में उत्तरोत्तर परिष्कार आया है। इसका श्रेय आधुनिक विज्ञापन एजेंसियों को जाता है। सन् 1939–40 में जहाँ इंडियन एण्ड ईस्टन न्यूज पेपर सोसायटी से मान्यता प्राप्त मात्र 14 एजेंसियाँ थी। उनकी संख्या बढ़कर 500 से अधिक हो गई है। उनके कार्यक्षेत्र और कार्यस्वरूप में भी अभूतपूर्व परिवर्तन हुये हैं। प्रारंभ में स्थानीय एजेंसियाँ मात्र समाचार पत्र–पत्रिकाओं में विज्ञापनकर्ताओं के लिए केवल जगह आरक्षित करने और उससे खरीदने में दलाली करने का काम करती थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जब औद्योगिक उत्पादन बढ़ा। तरह–तरह की वस्तुओं ने बाजार में प्रवेश किया और वस्तुओं की ब्रिकी में प्रतिस्पर्धा को दौर आया उसके साथ विज्ञापन एजेंसियों ने भी अनेक कामों को अपने हाथों में ले लिया। विज्ञापन एजेंसियों ने विज्ञापनों में चित्र, तस्वीर आदि का प्रयोग करके उन्हें आकर्षित बनाया। प्रभावी शीर्षपंक्ति और लोकप्रिय नारों को रचा और पुरानी लीग से हटकर विज्ञापनों को एक नया मौलिक स्वरूप प्रदान किया। आगे चलकर इन एजेंसियों ने मॉडलों का प्रयोग किया, नवीनतम कला तकनीकों को अपनाया, मीडिया चुनाव में विज्ञापनकर्ता की मदद की और बाजार सर्वेक्षण जैसे कामों को भी सफलता से पूरा किया।

आज ''मार्केटिंग'' शब्द का अर्थ पूर्णरूप बदल गया है। आज इसका अर्थ यह कहलाया जाता है कि – ''कोई भी उत्पादन या वस्तुयें निर्माता से लेकर मार्केटिंग द्वारा उपभोक्ता तक पहँचाना।'' आज हर जगह बाजारीकरण की कोशिशे की जा रही हैं चाहे वह शहर हो या ग्रामीण क्षेत्र। हर जगह बाजार की संभावना खोजी जा रही हैं। वस्तुओं का उत्पादन बाजार की माँग के अनुसार करना, सिर्फ आधा कार्य हुआ – यह तभी पूर्ण माना, जब वे वस्तुएँ या उत्पादन प्रभावशाली एवं सही वितरण व्यवस्था के द्वारा उपभोक्ता के पास पहुँचेंगे।

बाजार चाहे शहरी या ग्रामीण उसमें इस बात का विशेष ध्यान दिया जाता है कि वहाँ की माँग क्या है? और वहाँ पर किस उत्पादन की ब्रिकी संभव है? उदाहरण के तौर पर एक बार जूते बनाने वाली एक कंपनी ने संभावित बाजार की तलाश के लिए कंपनी के कर्मचारी को एक गाँव में भेजा तो उसे पता चला कि वहाँ पर जूते पहनने का रिवाज ही नहीं है और वहाँ कोई जूता नहीं पहनता है। तब उस कर्मचारी ने अपने शोधपत्र में यह लिखा कि यहाँ पर जूतों का बाजार असंभव है क्योंकि यहाँ कोई जूता नहीं लेगा। फिर भी उस कंपनी ने उसी क्षेत्र में बाजार की संभावनायें खोजने के लिए दूसरे कर्मचारी को भेजा तो उसने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि यहाँ तो जूतों की ब्रिकी की अपार संभावनायें हैं क्यांकि यहाँ अभी तक किसी को जूतों की जानकारी नहीं है, यहाँ जूतों के लिए अच्छा बाजार है। तो कुल मिलाकर बाजार की माँग क्या है? वहाँ क्या–क्या संभावनायें हैं। चाहे वह शहरी

बाजार हो अथवा ग्रामीण बाजार। शहरी बाजार में आर्थिक दृढ़ता ज्यादा होती है क्योंकि वहाँ का क्षेत्रफल अत्यंत बड़ा और घनी आबादी वाला होता है। इसलिए वहाँ की माँग भी ज्यादा होती है। इसके विपरीत ग्रामीण बाजार में वस्तुओं की माँग अत्यंत कम रहती है क्योंकि वहाँ की आबादी कम होती है।

शहरी एवं ग्रामीण दोनों ही बाजारों में वितरण प्रणाली की पगति एवं विकास करना आवश्यक है। जिससे माँग के साथ–साथ उसके विपरीत में भी सामन्जस्य स्थापित किया जा सके जैसे कच्चे माल की पूर्ति भले ही मौसम के अनुसार हो जैसे ताजी सब्जियाँ डिब्बों में सील बंद के लिये चाहिए हो, जबकि इनकी माँग बहुधा उस समय रहती है जब उनका मौसम नहीं रहता तथा इसकी आवक भी कम रहती है। इसलिये उपभोक्ता की माँग भी मौसम, आवोहवा के अनुसार अलग–अलग रहती है तथा कभी–कभी धार्मिक एवं स्थानीय रीति–रिवाजों के अनुसार तथा अन्य कारणों से भी बदलती रहती है। आधुनिक मार्केटिंग की व्याख्या यह है – ऐसी प्रशासन व्यवस्था होनी चाहिये जो प्रत्येक व्यापार एवं उसकी कार्यप्रणाली को इस प्रकार से संचालित तथा निर्देशित कर सके। जिससे प्रत्येक उपभोक्ता की क्रय–शक्ति को एक विशेष उत्पादन या सेवा की प्रभावशाली माँग में परिवर्तित कर, उसे गतिशील बनाकर, उस उत्पादन या सेवा को मुख्य क्रेता या उपभोक्ता तक पहुँचा सके। जिससे कंपनी के लाभ या अन्य उद्देश्य हैं वे पूरे हो सके।

संदर्भ :–

1. चूनावाला एण्ड सेठिया फाउनडेशन ऑफ एडवरटाइजिंग, हिमालय पब्लिसिंग हाउस, मुंबई – 1997 पृष्ठ 19–35
2. विज्ञापन अशोक महाजन हरियाणा साहित्य आकादमो, पंचकूला– 1994 पृष्ठ 38–45
3. एडवरटाइजिंग – राइट/विंटर/जेगलर टीएमएच एडीसन टाटा मेक्ग्रा हिल पब्लिसिंग – 1983 पृष्ठ 31–43
4. विज्ञापन तकनीक एवं सिद्धांत – नरेन्द्र यादव राजस्थान हिन्दी ग्रंथ आकादमी जयपुर – 2003 पृष्ठ 45–46

Post – Independence Politics in Odisha : The Role and Contribution of J.B. Patnaik

Gopinath Das

Abstract :- This paper is modest and unique most attempts to study and understand political process of the state odisha least mentioned and hardly focused in mainstream political process of the country. Odisha politics is characterized by political instability. The politics of Odisha has traversed through a dynamic and tortuous path. It has vacillated from phases of extreme uncertainty and instability to long periods political stability and good governance. In Odisha personality plays an important role in deciding the outcome of election. Political stability in the state particularly since 1980, coupled with investor friendly policies, has been a major contributing factor for the acceleration of industrialization. Here more emphasis has been given to highlight the contribution of J.B. Patnaik and it is an interference of this reality and the struggle of man who has loved his land its people so intensity.

Introduction :- The first phase of Post – Independence Politics in Odisha was marred by turbulence, instability and uncertainties. Unlike other state, it was not all smooth sailing for the Congress-I Odisha as it had to face formidable challenges from other political parties and groups. The fight for power and political supremacy was often bitter and prolonged. However, the struggle for power was not only among the parties or between the parties fought within and with each other, rather all the political battles were mostly driven by personal interests of the leaders and were manifestations of ego tussle.

Background :- Contrary to the national trend of Congress dominance to which celebrated political scientist Rajani Kothari described as one party dominant system, Odisha remained completely out of box this construct neatly. The first 10 years of governance in Odisha has witnessed a paradigm shift from the national politics as Congress couldn't able to secure absolute majority. It was only in 1961 mid-term election for the first time Congress secured absolute majority in Odisha under the leadership of Mr. Biju Patnaik. But again Congress got decimated in the next election that held in 1967. The breakway goup of Congress led by Dr. Mahatab (Jana Congress) formed a coalition government wih the same Ganatantra Parishad a new incarnation, the Swatantra Party. By the time mid-term election took place in 1971, Biju Patnaik had formed a breakaway Congress group called Utkal Congress and Dr. Mahatab had returned to the fold of Congress, dissociating with the Jana Congress. This time it was the turn of the Utkal Congress to join a coalition with the Swatantra Party to form the government under the leadership of R N Sing Deo. But much before the end of the tenure of this government, Biju Patnaik decided to return to the Congress fold paving the way for the formation of a Congress Government. But when his hope for assuming the leadership position was foiled by a scheming Nandini Satpathy, Biju Patnaik revived the Utkal Congress and the Congress government fell. In the subsequent assembly election, in 1974, the Congress manged to become the single largest party, but three short for majority. It formed the government with the help of communist.

In 1977, the Congress was routed in Odisha. The 1980 election saw the resurgence of the Congress, as the Janata experiment went disarray. The 19+85 election, a few month after assassination of Indira Gandhi, reinforced the Congress position.

The elections since 1990 have returned three Patnaiks to the position to the political hegemony, In 1990, Biju Patnaik, the vetran leader of Janata Dal, up the mantle of Janata dal again, after a gap of almost three decades. In 1995, the

lever of power returns to the Congressman, J B Patnaik, who was also the Congress Chief Minster for two terms in the 1980s. Since 2000, Naveen Patnaik, the son of Biju Patnaik and leader of Biju Janata Dal, has been in power, in a coalition with BJP which lasted till March 2009 when both the parties decided to go separately.

With Dr. Mahatab practically out, the State Congress became full in grip of Biju Patnaik. Dr. Mahtab, who had so long dominated the organization, did not even contest for the State legislature as he was sure that the Congress would be beaten hallow in the polls. He told newsmen that "for another ten years the Congress cannot get without a coalition."

Many of those in sympathy with Dr. Mahatab or resentful of the new leadership of Biju Patnaik offered themselves as independent candidate. The poll outcome was full of surprise. The Congress was flushed with a magnificent victory. Biju patnaik took over as the Chief Minister in 1961. Dr Mahatab and Janaki Ballav Patnaik were glanced as the anti-Biju Patnaik group. Menawhile, the Kamraj Plan was implemented in the All India Congress organization with many senior leaders resigning office ostensibly to strengthen the party. Biju Patnaik who had taken keen interest in the position and implementation of the Kamaraj Plan was also stepped down from the office in August 1963. But, he continued as the Chairman of Orissa planning Board and was reputed to be the super Chief Minister. Biju Patnaik was succeeded by Biren Mitra, the redoubtable 'Dada' of Cuttack.

With a few days, disturbances broke out all over the State over a student's agitation of a serious nature. The immediate cause was very flimsy. In the last week of September 1964 Sasnkar Das, a student of Cuttack engineering School, went to a shop to take delivery of his radio ser which he had given for repair. There was an exchange of words between the shop owner and the student over non-payment of some dues. In the course of the quarrel the shop-owner assaulted the student. Next day the Police took action as a batch of students stormed the shop in retaliation and the movement started. The houses of Biju Patnaik and of Himanshu Ghosh, finance Secretary, were ransacked by the mob. At every street crossing effigies of the Chief Minister were burnt.

J.B. in Politics :- Janaki Ballav Patnaik took up the leadership. Other prominent instigating student leaders were Ramachandra Rath, Surendra Singh Bhanja, Santosh Mahapatra, Bipin Das, Gopal Satpathy and Bhabanath Mishra.

Opposed Janaki Ballav Patanik ignited the students by writing several editorials and in news items in 'Prajatantra', supporting the student's agitation. The student agitation thoroughly shook the foundation of the government so much so that on February 1, 1965, the popular 'Dada' of Cuttack had to bow out of office. Mr. Sadasiv Tripathy, sworen in as the Chief Minister, on February 21, 1965.

The next general election in 1967 was preceded by one of the most virulent propaganda ever unleashed against just two men-Biju Patnaik and Biren Mitra. The Congress was weakened first by defections policy of Dr. Mahatab and his followers and secondly, by internal dissension over distribution of party ticket.

Similarly on ground of two reasons Janaki Ballav Patnaik was denied the Congress ticket. First, he was Mahatab's Man. Secondly, he was expostulating the government faults during the student movement. The first election he fought was as an independent candidate from Dharmasala Assembly Constituency at the age of just 39.

As an independent candidate Janaki Ballav Patnaik contested the Assembly election in 1967 against the Congress nominee. He believed that, to win the election, personality charisma is

more determinate factor than party affiliation of pecuniary influence.

It was indeed a Herculean task for Janaki Ballav Patnaik to win election without party affiliation and support. Therefore he was defeated. This defeat of Janaki Ballav Patnaik was a pillar of success as many believed that it was a projection of his feature leadership in Orissa. There are various factors responsible for his defeat in Dharmasala constituency, because Dharmasala was far away from his political operating centre that is Cuttack. Secondly the voters of Dhrmasala were not very much aquatinted or confident of Janaki Ballav patnaik's leadership except his rapport with Dr. H.K. Mahatab.

During 1969 a major split took place in Congress party over the issue of presidential election. This discord of Congress brought in its wake further divisions and subdivisions in Orissa. The Congress party led by Biju Patnaik and his followers voted for the official candidate Mr. Sanjeeva Reddy. The jana Congress leader Mr. Mahatab could perhaps visualize the shape of things to come. Mahatab and his party men voted infavour of V.V. Giri. On the other hand the Swatantra Party in Orissa supported the independent candidate Sri C.D. Deshmekh. V.V. Giri was the candidate of Indira Gandhi and the outcome virtually was in favour or Mr. Giri.

Because of his "Pro Sanjeeva Reddy" stand Biju Patnaik fell out from the grace of Indira Gandhi. He became the first leader to signal the Congress leaders in Delhi the inevitability of regional politics. As an example he formed his own congress outfit that is the Utkal Congress.

Congress party became leaderless in Oirssa. Biju Patnaik formed his own party Utkal Congress. Dr. Mhatab was in Jana Congress. It was the right opportune moment for Janaki Ballav Patnaik to take stock of the situation. In no time he evinced his anxiety to join the Congress (I) as Biju, Biren since his arch enemies were no longer there.

Two years later in 1971, Cuttack became Janaki Ballav Patnaik's political bastion. That year was the stepping stone for Janaki Ballav Patnaik's bright political career, Cuttack was his home town, as he was residing there for the last several years. Janaki Ballav Patnaik considered Cuttack as the pivotal place for contesting an election which would create a history of sorts for him. He contests from the Cuttack Loksabha constituency in 1971 and he became the Member of Parliament for the first time. The mathematics of Janaki Ballav Patnaik's electoral politics is simple. Fasten yourself in the right position and at the correct angle. That is the ample elucidator design of his adhesiveness as a legislator and frontal leader.

After Biju Patnaik left Congress, Janaki Ballav Patnaik found it suitable to come closer to the Congress and Indira. His rapport with Indira Gandhi strengthened his position and paved the way to lead the young Turks in Orissan Congress.

Role of J.B. as Chief Minister :- The eighth State Assembly election was a turning point as it paved for stable rule and coherent administratiin. In the polls held on May 31, 1980, the Congress party bagged 117 seats, while the Janata Party (Charan Singh Group) could secure only 13 seats for which it could not qualify itself as recognized Opposition party. With support of Arun Dey, one of the four CPI Members, Sarat Kumar Deo was declared as Leader of Opposition. Janki Ballava Patnaik, who was the Cabinet Minister for Tourism and Civil Aviation in the Central government, was chosen the leader of Congress party and became the Chief Minister.

The big challenges for J.B. Patnaik were to strengthen the Centre-State cooperation and to bring stabitlty in the party set up as well as administration. His perseverance and cool and mature handling of situation made him popular among the masses. He became Chief Minister after almost 20 years of political instability with a comfortable legislative majority and strong backing from the High Command. Patnaik in

various sectors. He Made sincere efforts and achieved considerable success in this regard. Direct Air service of Indian Airlines from Bhubaneswar to Delji was established. A new superfast train name (Nilachal Express) the first direct train from Bhubaneswar to Delhi was introduced. During his tenure, construction of major industry e.i. National Aluminium Company (NALCO) was undertaken, the K.B.K. (Klahandi-Bolangir-Koraput) Development programme was launched. In order to attract investors to the state, he formulated an industrial policy and introduced a singlr window system for quick disposal of applications. A new public sector undertaking styled as Industrial Infrastructure Development Corporation (IIDCO) was set up to provide land and industrial sheds in the state capital and other areas. He announced a programme to establish 1000 industries in 1000 days with an investment of Rs.1000 crores. Though this slogan could not achieve tangible results, it, however created suitable atmosphere for the rapid industrialization of the state. His government declared hotels and newspapers as 'industries' creating better opportunities for these two sectors.

Janaki Ballav Patnaik has long and protracted experience of contesting in the parliamentary and Assembly elections for four decades. He has fought many elections and has lost only a few. The first election he fought as an independent candidate, when he was denied of the Congress ticket, although he was in the Congress party, Dr Hare Krushna Mahatab, the guide of Janaki Ballav Patnaik and lost his interest in the coalition government of Congress and resigned on February 24, 1961. Biju Patnaik could isolate Dr Mahatab completely and compelled him to quit the Congress and father a new party, the Jana Congress.

During the first tenure of J.B. Patnaik, Prime Minister Indira Gandhi was assassinated on October 31, 1984 by her own bodyguards. Just one day before barbaric incident, she had come on her last visit to Bhubaneswar where she addressed a public meeting and said "whether Icontinue in office for long was not vital, but after death every drop of blood of mine would serve the people of the country for its betterment." After couple of month after her tragic demise, the election for ninth Odisha Legislative Assembly was held. There was tremendous sympathy wave all over the country which immensely helped the Congress Party to repeat its performance of last elections. The party led by J.B. captured the same number of 117 Assembly seats and he was unanimously elected as leader and formed a 16-Member Council of Minister March 10, 1985.

During his tenure many positive and forward looking steps were taken for the development of the state. Patnaik, a noted litterateur with strong cultural orientation, succeeded in establishing the Odisha Film Development corporation in collaboration with L.V. Prashad Studio Chennai; Odisha Research centre for propagation of Odissi ortist of dance and music under the supervision of Kum Kum Mohanty, an Odissi artist of International, Patnaik's most important contribution was re-introduction of Odia as official language in all governmental offices and judicial courts. Though Nabakrushna Coudhury has introduced Odia as the Official language, it was not implemented in true spirit due to political instability of 25 years and lack interest by bureaucrats. Patnaik gave strong direction to submit all official files in Odia language which was compiled with by all officials. Under his supervision and guidance a 'Glossory' was published wherein all English word commonly used in official transactions were translated into Odia for convenience of the officials. He also took initiative for establishing Xavier Institute of Management at Bhubaneswar with the provision of reservation of 2/3rd of seats for students of Odisha. To facilitate the technological studies, four engineering colleges, one each at Rourkela, Burla, Parjang (Talcher) and Bhubaneswar were established. He introduced free and compulsory education to all students both boys and girls between the age group of 6-14 years and made

provision for free-mid day meal to minimize the possibilities of drop-outs.

To improve the infrastructure, Patnaik focused on construction of roads and augmentation of pwer production capability. During his tenure, roads were laid between Panchayat samiti headquarters and from district headquarters to Bhubaneswar for which budgetary allocation was significantly enhanced. Besides, he was successful in obtaining funds from National Highway authority of India for improving conditions of National Highways passing through Odisha. As Odisha was a deficit state in terms of production of power, Patnaik took some reformative steps and commissioned Ib valley projects, upper Kolab and Rengali Power Projects. The N.T.P.C. at Talcher was expanded and modernized with a view to producing more quantum of electricity. To regulate the power sector, a new organization called 'Odisha Electricity Regulatory Commission' was created. Four companies named CESCO, NESCO, WESCO and SOUTHCO were floated as a measure to privatize and decentralize the power sector for generation, distribution and supply. Another Corporation named Odisha Power Generation Corporation. The second such establishment in the country was also formed.

Conclusion :- Whatever the results, it will only help to reinforce and vindicate the premise that the politics in Odisha in the post-Mandal and post-Mandir phase has not seen a marked departure from the past. The state politics has mostly been driven by a handful of personalities, bereft of any ideology or principle, across the ruling-opposition divide. But then individual factor has remained important in the political domain of all states at all times, but the distinguishing factor in Odisha is the near absence of the identity politics which political actors in other states have to accept as fait accompli. That explains the continuity – rather than the epistemological break in 1990s – in Odisha politics since Independence.

References :-

1. Antaryami Behera (20140, Sir Basudev Sudhal Dev – The Pioneer of Moder Odisha, Odisha Review, March.
2. Basu, Durga Das (1996), Introduction to the Constitution of India, New Delhi.
3. Chandra, Bipan (1984), Communalism in Modern Indi, New Delhi.
4. Dasharathi Bhuyan (2010), Emergence of Odisha as separate State and Contribution of Khalikote Raj Family, Odisha Review, April.
5. Granvile, Austin (1999), Working of Democratic Constitution: Cornerstone of Nation, New Delhi.
6. Kothari, Rajani (1970), Caste and Politics in India, New Delhi.
7. Morris Jones, W.H. (1947), Government and Politics in India.
8. Naranga, A.S. (2000), Indian Government and Politics.
9. Paul, R. Brass (1994), Politics of India since Independence.
10. Pylee, M.V. (1998), An Introduction to the Constitution of in India.
11. Ray, Amal (1970), Tension Areas in India's Federal System, Calcutta.
12. Weiner, Myron (1989), The Indian Paradox, New Delhi.

झारिया समुदाय की आर्थिक व्यवस्था एवं रूपांतरण

डॉ. प्रीती पाण्डे
अतिथि विद्वान, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर

झारिया समुदाय के लोग सघन वन एवं पहाड़ी क्षेत्रों में रहते हैं। इन भौगालिक परिवेश में रहने वाले झारिया परिवार आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए हैं। जिसके कारण इनमें निर्धनता व्याप्त है। इनके आय का प्रमुख साधन कृषि है, जो भौगोलिक प्रकृति पर अधिक निर्भर है। आधुनिक तकनीक से दूर रहते हुए परम्परागत पद्धति पर निर्भरता अधिक है।

व्यवसाय व्यक्ति की आर्थिक स्थिति के निर्धारण के साथ साथ उसकी सामाजिक प्रस्थिति का भी निर्धारण करता है। व्यवसाय के आधार पर किसी समुदाय के व्यक्तियों को उनके व्यावसायिक संबंध एवं भूमिका के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। सामाजिक विकास, सहयोग एवं संघर्ष दोनों के द्वारा होता है। समाज के विकास के लिए दोनों की आवश्यकता होती है कार्य क्षेत्र के सहयोग में श्रम विभाजन तथा श्रम सहयोग दो तत्व होते है जो समाज की व्यवसायिक संरचना का निर्धारण करते है। व्यवसाय के आधार पर ही व्यक्ति की प्रस्थिति तथा भूमिका का निर्धारण होता है। कई बार व्यवसाय के द्वारा व्यक्ति की समाज में स्थिति का निर्धारण किया जाता है। विशेषकर अनुसूचित जाति के संदर्भ में देखे तो यह सत्य प्रतीत होता है। चूंकि अनुसूचित जाति द्वारा व्यवसाय के क्रम में सबसे निम्न कार्य करते है। चूंकि अनुसूचित जात द्वारा व्यवसाय के क्रम में सबसे निम्न कार्य करते है। इसलिये सामाजिक संवर्ग में उन्हें सबसे निचले क्रम पर रखा गया है। व्यावसायिक स्थिति के आधार पर ही किसी समुदाय विशेष की सामाजिक, धार्मिक, तथा राजनैतिक स्थिति का आंकलन किया जा सकता है। व्यवसायिक स्थिति के आधार पर आर्थिक स्थिति की जानकारी प्राप्त की गई। उत्तरदाताओं से व्यवसाय संबंधी जानकारी विस्तार से निम्न रूप में प्रदर्शित है।

व्यवसायिक विभाजन :– व्यवसाय सामाजिक प्रस्थिति के निर्धारण का एक महत्वपूर्ण आधार बन गया है। आर्थिक लाभ व्यवसायिक उच्चता का प्रमुख आधार है। व्यवसाय में पवित्रता अपिवत्रता की धारणा समाप्त होती ता रही है। व्यवसाय में प्रवेश का आधार जाति या नातेदारी व्यवस्था न होकर व्यक्ति की शैक्षणिक योग्यता एवं प्रशिक्षण हो गया है। व्यवसायिक जीवन में होने वाले इन परिवर्तनों ने व्यक्ति के सामाजिक प्रस्थिति निर्धारण के आधार को अर्जनात्मक बाधार बना दिया है। शिक्षा के क्षेत्र में भी व्यवसायिक स्थिति का महत्वपूर्ण स्थान है। विभिन्न व्यवसायों के अनुरूप व्यक्ति की आर्थिक क्षमता, शिक्षा के क्षेत्र में व्यय को कम या अधिक सामर्थ्य प्रदान करती है। आधुनिक शिक्षा पद्धति के व्यय साध्य प्रकृति में व्यवसायिक स्थिति की उच्चता तथा निम्नता अधिक महत्व रखती है। विभिन्न व्यवसायों की प्रकृति और कार्य की दशा भी शैक्षिक दशाओं को प्रभावित करती है। आधुनिक सामाजिक व्यवस्था में शिक्षा और व्यवसाय एक दूसरे से इस तरह अंत संबंधित हो गये है कि शिक्षा को समाज के आर्थिक आधार के एक अंग के रूप में देखा जाने लगा है। झारिया समुदाय की व्यवसायिक स्थिति को निम्न रूप प्रस्तुत किया गया है।

तालिका क्रमांक 1
उत्तरदाताओं का व्यवसायिक स्थिति के आधार पर वर्गीकरण

व्यवसाय की प्रकृति	संख्या	प्रतिशत
कृषक	156	34.7
कृषक मजदूर/मजूदरी	141	31.3
छोटे दुकानदार	22	4.9

शासकीय सेवा	67	14.9
अशासकीय सेवा	53	11.8
व्यापार	11	2.4
योग	450	100.0

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि चयनित उत्तरदाताओ के परिवार के सदस्यों में 450 लोगों ने व्यवसाय की परिधि में विभिन्न व्यवसाय से जुड़े है। कुल 450 उत्तरदाताओं में से 34.7 प्रतिशत सदस्य परम्परागत कृषि को ही प्रमुख व्यवसाय बनाये हुए है। 31.3 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि मजदूर या अन्य मजदूरी पर निर्भर होकर अपनी जीविका चलाते है। छोटे दुकानदार के रूप में 4.9 प्रतिशत उत्तरदाता अपनी जीविका कमाते है। शासकीय परिधि अशासकीय सेवा से 26.7 प्रतिशत उत्तरदता जुडे है। 2.4 प्रतिशत उत्तरदाता स्वतंत्र व्यापार को अपना व्यवसाय बनाये हुये है।

उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकतर उत्तरदाताओं को अपने जीविका के लिये प्रमुख से कृषि तथा मजदूरी पर निर्भर रहना पड़ता है। इन सघन वन में बहुत कठिनाईयों जीवन व्यतीत करते है।

व्यवसाय से जुड़े :– व्यवसाय व्यक्ति की आर्थिक परिस्थिति के निर्धारण के साथ उसके सामाजिक परिस्थिति का भी निर्धारण करता है। व्यवसाय के आधार पर किसी समुदाय के व्यक्तियों को उसके व्यवसायिक संबंध एवं भूमिका के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

झारिया समुदाय विकास की प्राथमिक अवस्था में है और वह अपने जीवन यापन के लिए उपलब्ध व्यवसायों का चयन करता है। वह किसी एक निर्धारित व्यवसाय पर आश्रित नहीं रहता, अपितु समय और स्थिति की मांग के आधार पर भिन्न भिन्न व्यवसायों में अपनी श्रम शक्ति का उपयोग करता है।

उनकी अर्थव्यवस्था मुख्यतः खेती, पशुपालन, मुर्गीपालन, लकड़ी बेचना, जंगल में मजदूरी करना, वन विभाग पेड़ों की कटाई आदि कार्यो में झारिया समुदाय के लोग मजदूरी को प्राथमिकता देते है। तेंदू पत्ते तोड़ने के कार्यो में भी ये लोग लगे रहते है । इन सभी कार्यो में उनके परिवार के अन्य सदस्य भी सहयोग देते है। क्योंकि रोजगार के साधनों की कम उपलब्धता तथा अत्यधिक गरीबी के कारण परिवार के अन्य सदस्यों यहां तक कि कम आयु के बच्चों को भी अर्थ कार्य में जोड़ना पड़ता है। झारिया जाति की व्यवसायिक स्थितियेां से संबंधित प्राप्त आंकड़ों को निम्न रूप से प्रस्तुत किये गये है।

तालिका क्रमांक 2
उत्तरदाताओं के अतिरिक्त व्यवसाय से जुड़े अन्य पारिवारिक सदस्य

व्यवसाय से जुड़े सदस्य	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	93	20.7
2	136	30.2
3	109	24.2
4	64	14.2
5	48	10.7
योग	450	100

उक्त तालिका के अंतर्गत उत्तरदाताओं के अतिरिक्त व्यवसाय से जुड़े अन्य पारिवारिक सदस्यों की जानकारी संबंधी आंकड़ो को दर्शाया गया है। प्राप्त आंकड़ों में 20.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अतिरिक्त परिवार का एक अन्य सदस्य भी व्यवसाय से जुड़ा है। 30.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अतिरिक्त परिवार के दो अन्य सदस्य भी व्यवसाय से जुड़ा है। 24.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अतिरिक्त परिवार के चार अन्य लोग भी व्यवसाय से जुड़ा है। 14.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अतिरिक्त परिवार के पांच अन्य सदस्य धर्नोपार्जन के लिए व्यवसाय (कृषि, मजदूरी, आदि) से जुड़े हुए है।

उक्त विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि 79 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अतिरिक्त परिवार के 3 से 4 सदस्य धर्नोपार्जन के लिए व्यवसाय से जुड़े हुए है। अर्थात अधिकतर परिजन संयुक्त रूप से व्यवसाय से जुड़कर धनोपार्जन में अपना सहयोग देते है। जिनमें उनके बच्चे भी शामिल है। क्यों कि आय को अजित करना उनकी विवशता है। यह स्थिति उनके दयनीय आर्थिक दशा की ओर इशारा करता था।

आयगत स्थिति :– व्यक्ति के आय के आधार पर उसकी सामाजिक स्थिति प्रभावित होती है। आन्द्रेवेताई (1969)[1] ने तन्जीर के श्रीपुरम गांव के अध्ययन में ग्रामीण आर्थिक संरचना एवं स्तरीकरण का विश्लेषण करते हुये पाया कि नवीन परिवर्तनों से ग्रामीण जाति व्यवस्था एक वर्ग व्यवस्था में परिवर्तन हो रहे है। ग्रामीण परिवेश में भू–स्वामित्व आर्थिक स्थिति निर्धारण का प्रमुख कारण माना जाता है। आय का अंतर न केवल वर्गीय अंतर स्पष्ट करता ह बल्कि यह जीवन अवसर, जीवन शैली, मूल्यों विश्वासों आदि को प्रभावित करता हे।

उत्तरदाताओं के पारिवारिक के आय के विश्लेषण की सुविधा के लिए आय को छह श्रेणियों में विभक्त किया गया है। आय के आधार पर ही व्यक्ति की आर्थिकक स्थिति की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। उत्तरदाताओं की आर्थिक जानकारी प्राप्त करने के लिये उनसे भी उनकी मासिक आय से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई। इसमें उनके परिवार के सभी सदस्यों की मासिक आय की जानकारी ली गई। विस्तृत जानकारी निम्न तालिका से स्पष्ट होती है।

तालिका क्रमांक 3
उत्तरदाताओं की मासिक आय

मासिक आय रू. में	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत	प्रति परिवार औसत मासिक आय (रू. में)
3000 तक	107	23.5	2784.95
3001–6000	142	31.5	5194.77
6001–9000	119	26.4	8111.96
9001–12000	43	9.6	11308.33
12001–15000	22	4.9	14194.74
15001 से अधिक	17	3.6	17864.81
योग	450	100.0	7255.03

उपयुक्त तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 3000 रूपये तक मासिक आय वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 23.8 है, जिनकी प्रति परिवार औसत मासिक आय 27.84.95 रूपये है। 31.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय रूपये 3001.6000 तक के मध्य है जिनकी प्रति परिवार औसत मासिक आय 5194.77 रूपये है। 26.4

प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय रूपये 6001.9000 तक के मध्य है जिनकी प्रति परिवार औसत मासिक आय 8111.96 रूपये है 9.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय रूपये 9001–12000 तक के मध्य है, जिनकी प्रति परिवार औसत मासिक आय 11308.33 रूपये है। 4.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय रूपये 12001–15000 तक के मध्य है, जिनकी प्रति परिवार औसत मासिक आय 17864.81 रूपये है। इस प्रकार समस्त उत्तरदाताओं की औसत मासिक आय 7255.03 रूपये है। 3.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय रूपये 15000 से अधिक है, जिनकी प्रति परिवार औसत मासिक आय 17864. 81 रूपये ह। इस प्रकार समस्त उत्तरदाताओं की प्रति परिवार औसत मासिक आय 7255.03 रूपये है। उक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि आधे से अधिक चयनित उत्तरदाता ऐसे है। जो भूमिहीन है। 3 से 6 एकड़ तक कृषि योग्य भमि वाले 12.2 प्रतिशत उत्तरदाता है अधिक कृषि योग्य भूमि वाले उत्तरदाता अत्यंत कम है।

तालिका क्रमांक 4
सिंचाई के साधन के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

सिचाई के साधन	संख्या	प्रतिशत
हां	64	41.0
नहीं	92	59.0
योग	156	100

उक्त तालिका के अंतर्गत कृषि कार्य से जुड़े 156 उत्तरदाताओं में से सिंचाई के साधन की उपलब्धता के जबाव में मात्र 41 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास सिंचाई के साधन उपलब्ध है। जब कि 59 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास सिंचाई के साधन उपलब्ध नहीं है। उक्त सारणी के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि सर्वाधिक उत्तरदाताओं के पास सिंचाई के साधन नहीं है वे सभी कृषि के लिए वर्षा के पानी पर निर्भर रहते है। इसके साथ ही साथ बिजली की समस्या तथा डीजल (ईधन की) अनुपलब्धता से भी सिंचाई का कार्य प्रभावित होता है। जो उनकी सिंचाई संबंधी रूचि को कम कर देता है। मजबूरन उन्हें प्राकृतिक साधनों पर ही अधिक निर्भर रहना पड़ता है।

आवासीय परिवेश :– विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ. 1991)[2] आवासीय दशाओं को आवासीय परिवेश की अवधारणा के अंतर्गत प्रस्तुत किया है। आवासीय परिवेश वह भौतिक संरचना है, जो मनुष्य द्वारा उपयोग में लायी जाती है। जिससे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक सेवायें सुविधायें एवं वस्तु निहित होती है। और जो परिवार तथा व्यक्ति की कार्यकुशलता को आधार प्रदान करती है। आवासीय परिवेश में वांछित जल आपूर्ति घर के कूड़ा–करकट गंदगी को साफ करने के साधनों, स्नान, कपड़ा, धोने तथा भोजन बनाने की सुविधाओं आदि से परिपूर्ण होना चाहिए।

विभिन्न समुदायों में आवासों का निर्माण अलग–अलग स्तर एवं प्रारूपों से होता है। ग्रामीण क्षेत्र के मकानों में झोपड़ी तथा कच्चे खपरैल वाले मकान प्रमुख है। मकान इस तरह बनाये जाते है किक वे बंद हों। अधिकांश मकानो में रोशनदान या खिड़कियों की सुविधा नहीं होती है। इस आवासीय मकानों का स्वरूप निवास की वांछित सुविधाओं के अनुपयुक्त होता है।

भारतीय ग्रामीण समुदायों में निकटतम पर्यावरण, आवासीय, स्वच्छता तथा उसके प्रभावों के संदर्भ में ज्ञान बहुत ही सीमित रहा है। अशिक्षा, अज्ञानता, परंपरागत मान्यतायें निर्धनता

और निम्न सामाजिक –धार्मिक प्रस्थिति इसके प्रमुख कारण है। कर्वे (1957)[2] के अनुसार जो व्यक्ति भोजन, वस्त्र कठिनाई से एकत्र कर पाता है, उसके लिए पर्यावरण संबंधी स्वच्छता का स्तर निम्न होता जाता है। घने जंगलां जैसे भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले समूह अपनी निम्न सामाजिक, आर्थिक, स्थिति के कारण गृह स्वच्छता और पर्यावरण संबंधी स्वच्छता के संबंध में सामान्य ग्रामीण व्यक्ति की तुलना में कहीं अधिक पिछड़ा हुआ है।

तालिका क्रमांक 5
उत्तरदाताओं की निवास स्थान के आधार पर वर्गीकरण

निवास	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
ग्रामीण	341	75.8
नगरीय	109	24.2
योग	450	100.0

उक्त तालिका के अंतर्गत उत्तरदाताओं के निवास स्थान को विश्लेषित किया गया है। प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट विदित है कि 75.8 प्रतिशत उत्तरदाता ग्रामीण क्षेत्र में निवास करते है। तथा 24.2 प्रतिशत उत्तरदाता नगरीय क्षेत्र के निवासी है।

उक्त विश्लेषण से स्पष्ट दृष्टिगोचर है कि चयनित उत्तरदाताओं मं शहरी तथा ग्रामीण दोनों ही क्षेत्र के उत्तरदाताओं को सम्मिलित किया गया है। इनमें ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत सर्वाधिक है।

पेयजल व्यवस्था :– घने वन क्षेत्रों में दूषित जल से उत्पन्न रोगों की अधिकता पाई जाती है। इस संबंध में कुरीयन (1985)[4] ने अपने अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट किया है कि आदिवासी समुदाय के 54 प्रतिशत लोग जल से उत्पन्न बीमारियों से ग्रसित रहते है। आदिवासी पेट की विभिन्न बीमारियेां और अन्य बीमारियों जैसे– हैजा, चेचक, एवं चर्म रोगों से ग्रसित है। पेयजल की शुद्धता स्वास्थ्य के अत्यंत घनिष्ठ रूप से संबंधित है। दूषित पेयजल से विभिन्न प्रकार के रोगों की उत्पत्ति होती है।

व्यक्ति के स्वास्थ्य विकास एवं बृद्धि के लिये स्वच्छता एवं सफाई एक महत्वपूर्ण दशा है, जो भोजन हम ग्रहण करते है। जिस पर्यावरण में हम सांस लेते है तथा जो जल का हम सेवन करते है। उसकी स्वच्छता उत्तम स्वास्थ्य के लिए अति आवश्यक है। (घोष 1969)[5] पेयजल स्वास्थ्य की अनिवार्य आवश्यकता है रूप में मान्य है। परिवार की महत्वपूर्ण आवश्यकता साफ एवं सुरक्षित जल की आपूर्ति है।

उक्त स्थिति को ध्यान में रखते हुये शोधार्थी ने दूरस्थ तथा सघन भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले झारिया समाज में पीने के पानी के स्त्रोत तथा उसकी उपलब्धता के संबंध में जानकारियां एकत्र कर निम्न सारणी में विश्लेषित किया है।

तालिका क्रमांक 6
पोने के पानी के स्त्रोत के आधार पर उत्तदाताओं का वर्गीकरण

पीने के पानी का स्त्रोत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
हैण्डपंप	158	35.1
नल	101	22.4

कुंआ	113	25.1
नदी	66	14.7
तालाब	72	16.0

उत्तरदाताओं के परिवार द्वारा प्रयुक्त पेयजल के आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि 64. 9 प्रतिशत उत्तरदाता हैण्डपंप/नल के पानी का उपयोग करते है। 18 प्रतिशत कुएं के पानी का 9.7 प्रतिशत नदी के पानी का जबकि 7.4 प्रतिशत उत्तरदाता तालाब के पानी का उपयोग करते है।

अतः विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि अधिकतर उत्तदाता के परिवारों द्वारा हैण्डपंप के पानी का उपयोग किया जाता है। इनमें से कुछ हैंडपंप बिगड़े हुए है। गर्मी के दिनों में अधिकतर हैंडपंपों में पानी नहीं आता है। इन दिनो इन्हें बहुत परेशानी होती है।

तालिका क्रमांक 7
पानी के निकटतम स्त्रोत की दूरी के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

पीने के पानी के स्त्रोत की दूरी	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
घर के निकट	168	37.3
घर से दूर	282	62.7
योग	450	100

पानी के निकटतम स्त्रोत संबंधित आंकडों के यह विदित होता है कि 37.3 प्रतिशत उत्तरदाता घर के निकट स्थित पानी के स्त्रोत का उपयोग करते है। जबकि 62.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं को पानी के लिए घर से दूर जाना पड़ता है। जिसके कारण उन्हें कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

उक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अधिकतर उत्तरदाताओं के घरों से पानी के स्त्रोत की दूरी अधिक है। यह दूरी लगभग 1 से 2 किलोमीटर की है। जिसके कारण अधिक वक्त पानी लाने में चला जाता है।

ऋणग्रस्तता की स्थिति :– समाज में ऋणग्रस्तता की समस्या अत्याधिक जटिल एवं गंभीर है। कृषि शाही आयोग के इस कथन से ऋणग्रस्तता का अनुमान लगाया जा सकता है कि भारतीय कृषक ऋण में जन्म लेता है। और ऋण में ही जीवन व्यतीत करता है। प्रायः भूमिहीन लोग जीवन निर्वाह के लिये पर्याप्त आय के साधन न जुटा पाने के कारण सेठ साहूकारों से ऋण लेते है। गरीबी एवं ऋणग्रस्तता कभी कभी इतना भयावह हो जाती है कि कई पीढ़ी तक उसके वंशज उससे मुक्त नहीं हो पाते है। कृषि ऋण के लिए नाबार्ड की सहायता से सरकार कृषकों को अनुदान दिया करती ह। फिर भी ऋणग्रस्तता बनी रहती है। पिछले कुछ वर्षो के दौरान (हरित क्रांति के बाद) बड़े किसानेां की आय में बेतहाशा वृद्धि दर्ज की गई लेकिन छोटे किसानों की स्थिति वहीं है साहूकारों के चंगुल से छूटने का कोई ढंग नहीं दिख रहा है। ग्रामीण परिवेश में आथिक विषमता में बढ़ोत्तरी है शर्मा (1993) अध्ययन क्षेत्र में ऋणग्रस्तता की स्थिति को निम्न तालिका में दर्शाया गया है –

तालिका क्रमांक 8
ऋणग्रस्तता की स्थिति का विवरण

ऋणग्रस्तता की स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
हाँ	288	64.0
नहीं	115	25.6
निरूत्त	47	10.4
योग	450	100.0

अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि 64 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने ऋण की बात को स्वीकार किया है, जबकि 25.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने ऋण लेने की बात को अस्वीकार किया है। शेष 10.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने ऋण लेने के प्रश्न पर चुप्पी साध रखी थी।

उक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र के अधिकतर उत्तरदाता ऋणग्रस्त पाये गये है।

तालिका क्रमांक 9
ऋणग्रस्तता के कारणों से संबंधित विवरण

ऋणग्रस्तता का कारण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
विवाह	53	11.6
कृषि	32	7.1
व्यापार	17	3.8
कुटीर एवं लघु उद्योग	13	2.9
भवन निर्माण	62	13.8
बीमारी	88	19.6
अन्य (शिक्षा, न्यायालीन कार्य आदि	28	6.2
निरूत्त	157	34.9
योग	450	100.0

उक्त तालिका के अंतर्गत ऋणदाता के कारणों को ज्ञात कर प्रस्तुत किया गया है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार 11.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने विवाह के कारण ऋण लिया है। 7.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कृषि कार्य के लिए ऋण लिया है। 3.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने व्यापार के लिए ऋण लिया है। 2.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कुटीर एवं लघु उद्योग के लिए ऋण लिया है। क13.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने भवन निर्माण के लिए ऋण लिया है। 19.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने

बीमारी के लिए ऋण लिया है। 6.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अन्य कारणों से ऋण लिया है। 34.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ऋण नहीं लिया है।

उक्त विश्लेषण से स्पष्ट विदित है कि अधिकांश उत्तरदाता ऋणग्रस्त है जिन्हें अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति क लिये ऋण हेतु विवश होना पड़ता है।

तालिका क्रमांक 10
कृषि में खाद का प्रयोग संबंध में झारिया समुदाय के उत्तरदाताओं का अभिमत

खाद	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
जैविक	21	13.5
रासायनिक	17	10.9
दोंनों	22	14.1
कुछ भी नहीं	96	61.5
योग	156	100.0

अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि 13.5 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्य में जैविक खाद का प्रयोग करता ळें 10.9' प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्य में रासायनिक खाद का प्रयोग करता है। 14.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं दोनों खाद (जैविक एवं रासायनिक खाद) का प्रयोग करते है। इसके विपरीत 61.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वे कृषि कार्य में कुछ भी प्रयोग नहीं करते है। क्यों कि उनकी आर्थिक दशा के कारण खाद का व्यय वहन करने में असमर्थ है।

उक्त विश्लेषण से स्पष्ट विदित है कि कुछ झारिया कृषकगणों द्वारा कृषि कार्य में जैविक खाद तथा रासायनिक खाद का प्रयोग भी करते पाये गये है। जो उनके परम्रागत कृषि कार्य में परिवर्तन की और इंगित करता है, किन्तु इस परिवर्तन को गति धीमी है।

तालिका क्रमांक 11
झारिया समुदाय के युवकों का रोजगार पसंदगी संबंधो अभिमत

पसन्द कार्य	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
शहर में जाकर कार्य करना	213	47.3
लघु एवं कुटीर उद्योग द्वारा जीविका	34	7.6
कृषि कार्य करना	57	12.7
व्यापार करना	27	6.0
नौकरी	119	26.4
योग	450	100.0

उक्त तालिका के अंतर्गत झारिया समुदाय के उत्तरदाताओं से युवाओं का रोजगार पसंदगी के संदर्भ में पूछने पर मात्र 6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि युवा वर्ग व्यापार पसंद करता है। 26.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि युवा वर्ग वर्ग का नौकरी की और विशेष ध्यान रहता है। 12.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि युवा वर्ग का कृषि की और ध्यान रहता है। 7. 6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि युवा वर्ग का झुकाव उद्योग धंधे की और ध्यान रहता है। लघु एवं कुटीर उद्योग की और मात्र 5.5 प्रतिशत युवा वर्ग ध्यान देते है। तथा 47.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के मतानुसार शहर में जाकर कार्य करने में युवा वर्ग बहुत रूचि रखता है। उक्त विश्लेषण से स्पष्ट विदित है कि अधिकतर युवा वर्ग को रोजगार के रूप में नौकरी अधिक पसंद है। युवा परिवर्तन के पथचिन्ह हैं इसे ध्यान में रखकर विकास कार्य को क्रियान्वित किये जाने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Parvathamma (1984) : Schedulaced Caste and Tribes: A Socio-economic Survey, Delhi Ashish.
2. Venkateswarlu, D (1990) : Harijan-Upper Classes Conflict Delhi: Discovery.
3. Report of the National Commission for Sc and ST (1990), Government of India, New Delhi.
4. Tripartile, R.B. (1984) : Dalits: A Sub Human Society, Delhi Ashish
5. Khan, MA (1995) Human Rights and the Dalits Delhi: Up pal.
6. Mishra. P.K. (1999) “Untouchability in South India” The Eastern Anthropologist, Vol 52, No.1